पंडित मदन मोहन मालवीय और स्वदेशी आंदोलन की प्रासंगिकता

ज़िले सिंह चौधरी
Satyawati College (Evening), University of Delhi

महामना और उनका स्वदेशी आंदोलन

''व्यक्ति अगर किसी कार्य का संकल्प कर ले और उसके लिए पूरी शक्ति से जुट जाए तो उसका वह कार्य पूरा होने से कोई नहीं रोक सकता है। इस वाक्य को यथार्थ के धरातल पर उतारने वाले किसी व्यक्ति का स्मरण करें तो मालवीय जी का नाम सर्वोत्तम स्थान पर आता है।'' पंडित मदनमोहन मालवीय जी स्वदेशी आंदोलन का समर्थन करते थे और कुछ उद्योगों के संरक्षण की मांग करते थे। अपने दृष्टिकोण के समर्थन में वह जॉन स्टुअर्ट मिल, विस्मार्क रूस के वित्त मंत्री काउंट द विट्ट के उदाहरण देते थे। सन् 1906 में कलकत्ता में एक भाषण में उन्होंने कहा, ''इस स्वदेशी को धार्मिक कर्तव्य का हिस्सा मानो, यह हमारे देशवासियों के प्रति हमारा कर्तव्य है। मैं इसे मानवता का धर्म मानता हूं और यह हमारा अपना विशेष धर्म है। मानवता के धर्म की मांग है कि आप अपनी शक्ति की सीमा तक स्वदेशी को प्रोत्साहित करें। मालवीय जी का कहना था कि सभी देशवासियों को अपने देश में बनने वाले कपड़े का उपयोग करके अपने आपको स्वदेशी बनाना चाहिए। मालवीय जी का कहना है कि अब भी महसूस कर रहा हूँ कि मैं उसके कम से कम जीने के लिए भोजन का एक निवाला प्राप्त करने में मदद कर रहा हूं...जब आप अपने चारों तरफ इस प्रकार की पीड़ा को पाते हैं, जब आप जनता की जरूरतों को इतना बड़ा व उनकी आय को इतना कम पाते हैं, उन्हें इतना गरीब पाते हैं तो मैं कहता हूं कि यह स्वस्थ्य भावना वाले हर व्यक्ति का धार्मिक कर्तव्य है कि वह अपनी अधिकतम सीमा तक भारतीय उत्पादकों को तरजीह देकर और कुछ त्याग कर भारतीय उद्योगों को बढ़ावा दें।'' उन्होंने स्वदेशी के प्रोत्साहन को हर भारतीय का पवित्र कर्तव्य बताया था। उनका यकीन था कि इस देश की आर्थिक बीमारियों का इलाज 'स्वदेशी' था। यह आम जनता को भुखमरी से बचाने का एक महत्वपूर्ण साधन था। 'उन्होंने स्पष्ट किया कि ''स्वदेशी आंदोलन में गैर–वफादारी या घृणा का जरा सा भी अंश नहीं है, कोई राजनीतिक पक्षपात नहीं है।'' वह कहते थे कि भारतीयों का यह पवित्र कर्तव्य है कि देश की गरीबी को कम करने व देशवासियों के रोजगार व रोटी के लिए इंतजाम करें। स्वदेशी के अलावा, वह स्वयं सहायता का भी समर्थन करते थे।

मालवीय जी ऐसे व्यक्ति थे जिनकी इच्छाशक्ति इतनी प्रबल कि बगैर किसी संसाधन के ही एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना कर दी, जो कालांतर में पूरे देश में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह स्वदेशी से संकल्प लेने व मोटा, महंगा होने पर भी स्वदेशी वस्तुएं इस्तेमाल करने को कहते। स्कूल व कॉलेजों के बायकॉट की जगह वह छात्रों से परीक्षा के बाद स्वदेशी अपनाने को

E-ISSN: 2454-342x, UGC Index No. **44539**

कहते। उन्होंने बड़ी गंभीरता से स्वदेशी का पालन किया व प्रयास व अन्य स्थानों पर स्वदेशी केन्द्र खोलने के प्रयास किए। उनकी रणनीति हर सीताराम चतुर्वेदी इस प्रकार लिखते हैं, ''एक तरफ वह ब्रिटिश सरकार को कानून बनाने के लिए गंभीर चेतावनी दे रहे थे व दूसरी तरफ स्वदेशी उद्योगों के विकास के लिए केन्द्र स्थापित कर रहे थे। बाद में, उन्होंने खद्दर के इस्तेमाल को बनाने के लिए 'गांधी खद्दर फंड' शुरू किया। महात्मा गांधी ने मालवीय जी को अपना बड़ा भाई कहा और ''भारत निर्माता'' की संज्ञा दी। इंडस्ट्रीयल कमीशन रिपोर्ट को सिफारिशों से वह पूरी तरह सहमत नहीं थे। इसलिए उन्होंने असहमति की टिप्पणी कह कर तकनीकी शिक्षा व देशी उद्योगों को बढ़ावा देने की आवश्यकता बताई। सन् 1985 के दिसम्बर में औद्योगिक सम्मेलन में मालवीय जी ने स्वदेशी को सबसे बड़ा ये बताया। उन्होंने कहा कि यदि जनता विदेशी कपड़ा न खरीदने का प्रण कर ले लाखों लोगों को रोजगार मिल जाएगा। उनके भाषण को भावुक व प्रभावी माना पर सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भी उन्होंने स्वदेशी की अलख जलाए रखी।

धार्मिक सुधार कार्य

मालवीय जी को हिन्दू मुस्लिम एकता भी उतनी ही प्रिय थी जितने सामाजिक–धार्मिक सुधार कार्य। सनातन धर्म के पक्के समर्थक होने के बावजूद वह विश्व बंधुत्व में विश्वास रखते थे। उनके दिल में रंग, जाति या धर्म को लेकर कोई भेद–भाव नहीं था। हिन्दू–मुसलमान, अछूत सभी उनके प्रिय थे और उन्होंने सबकी भलाई के लिए काम किया। अपने भाषणों में उन्होंने राष्ट्रीय विकास से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए थे। उन्होंने सरकार व मुसलमान दोनों की निंदा की सरकार की इसलिए क्योंकि वह मुसलमानों को राजनीतिक रूप से ज्यादा महत्वपूर्ण समुदाय होने के कारण ज्यादा तरजीह दे रही थी तथा मुसलमानों की इसलिए क्योंकि व प्रशासनिक सुधार के सवाल पर अलग हो गए थे। फिर भी उन्होंने हिन्दुओं से कांग्रेस न छोड़ने व हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए काम करते रहने की अपील की। एक बार फिर, 1918 में कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में तिलक की जगह अध्यक्षेय भाषण में उन्होंने प्रतिनिधियों से कांग्रेस का संदेश गाँव–गाँव तक ले जाते व हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए काम करने को कहा। पक्के सनातन धर्मी होने के बावजूद उन्हें एक बार आर्य समाज के सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए बुलाया गया था। यहाँ तक कि ईसाई व मुस्लिम संगठनों ने भी उन्हें आमंत्रित किया और अपनी सभाओं की अध्यक्षता उनसे करवाई।

मालवीय जी कोई एक इंसान नहीं बल्कि अपने आप में एक संस्थान और इस देश की धरोहर को समेटे हुए उपजाऊ जमीन थे। मालवीय जी हिन्दुओं के पुनर्गठन व एकीकरण के लिए काम कर रहे थे। फिर भी वह हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए समान रूप से चिंतित थे। सन् 1933 में लाहौर में उनका उर्दू का भाषण इतना तर्कसंगत व ओजस्वी था कि उपस्थित मुस्लिम श्रोता बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा, ''हिन्दू–मुस्लिम एकता आजादी के दिषा में पहला कदम है... यह हम सबके लिए शर्म की बात है कि हम अपनी सुरक्षा व हितों की गारंटी के लिए विदेशियों की तरफ देखते हैं। मेरा अपने धर्म में गहरा विश्वास है लेकिन जब भी मैं किसी चर्च या मस्जिद के आगे से गुजरता हूं तो मेरा सिर श्रद्धा से अपने आप झुक जाता है। पाकिस्तान के संस्थापक एम.ए. जिला मालवीय जी का

बहुत सम्मान करते थे। मालवीय जी कहना था कि ऐसी परिस्थिति में यदि देश के नागरिकों के बीच जाति, धर्म, क्षेत्रवाद और भाषा को लेकर अगर विवाद उत्पन्न होता है तो यह अत्यंत कष्टकर है।

मालवीय जी के इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि मालवीय जी फिरोजशाह मेहता व गोखले के उदारवादी समूह से जुड़े हुए थे, जबकि उनके विचार तिलक के विचारों से मेल करते थे। वह अनिवार्य रूप से संविधानवादी थे–स्वभाव और विश्वास दोनों से। राजनीति में वह क्रमिक विकास के पक्षधर थे तथा प्रार्थना, याचिका व विरोध प्रदर्शन के क्षमता की वकालत करते थे। 'उत्तरदायित्वपूर्ण सहयोग' में उनका दृढ़ विश्वास था। स्वदेशी का समर्थन करते हुए भी वह ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार थे। तथा उनकी न्यायपूर्ण भावना में मालवीय जी को पूरा विश्वास था। वह स्वदेशी को धार्मिक कर्तव्य व जनता के भूख व भुखमरी से बचाने का प्रभावी साधन मानते थे वह सनातनधर्मी थे लेकिन ईसाई व मुस्लिम भी उनके प्रशंसक थे। इसका कारण था सभी धर्मों के प्रति उनका आदर भाव व विश्व बंधुत्व में विश्वासी संकट के समय सभी की उम्मीद भरी निगाहें उन पर टिक जाती थीं और वह भी देश की पुकार पर कुछ भी करने के लिए फौरन ही उठकर खड़े हो जाते थे। पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे व्यक्ति और उनकी शख्सियत कभी मरती नहीं बल्कि लोगों के दिलों में प्रवेश करके अमर हो जाती है। इसलिए लोगों को उनके देश के प्रति किए गए कार्य को अपने दिलों और दिमाग में जगाए रखना चाहिए।

संदर्भ–ग्रंथ

1. 1930–31 इंडियन राउंड टेबल कांफ्रेंसेस, 12 नवम्बर, 1930–जनवरी, 1931, प्रोसीडिंग्स, कलकत्ता, 1931
2. 1931 इंडियन राउंड टेबल कांफ्रेंस सेकण्ड सेशन, 7 सितम्बर–1 दिसम्बर, 1931, प्रोसीडिंग्स ऑफ द फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी एण्ड माइनॉरिटीज कमेटी, वॉल्यूम 1–3, कलकत्ता, 1912
3. प्रोसीडिंग्स ऑफ द फर्स्ट इंडियन नेशनल कांग्रेस हेल्ड एट बाम्बे ऑन द 28, 29 एण्ड 30 दिसम्बर, 1885, बॉम्बे 1886
4. 1938 हरीपुर कांग्रेस सावनिर, पूना पब्लिस्ड बाई बी.जी. कृष्णामूर्ति।